रेगापातर्केयापरे ययापु के यद् धेवा



ईं:ने.नेब.बीश.न सेश्रा

८ व्हें मा श्रेमा ५८ स्टामिन हे प्यट से दायर मह वर्षे दार्श र नमा श्र ब्यायानेता नम्यमेन न्यायान मिन्यान स्त्रायान स्त्रायाच्या स्त्रायाच्याच्या स्त्रायाच्या स्त्रायाच स्त्रायाच्या स्त्रायाच स् लिव प्रमः ह्या वदे वे सेवा वाव या दर वा उत्तर वा व्यव सेवा वर्ष सेवा वर सेवा वर्ष सेवा र्नेत्रन्यायवे ळत्र रेगान्य श्रीताये प्राये या का वेगा रेन्। दार्के याना नर-रु-वर्ने स्वाभाशान्त्रें वायेव व्याप्त स्वाभाव विष्ये । वर्षा वर्षा स्वाभाव स्व र्रेश्वर्या ग्राट्स के र्रेश में या यात्र या ग्री केंट्र क केत्र में विया भ्रया थेंट्र ८ र्स्ट मार्च मार् विवायोशम्दरहेर्यायात्रवारात्र्राहराइर इर वर्षेला क्रीता सकेराया বাৰ্ব শ্ৰী শাশ্ৰদ দ্বিদ স্তুদ ভ্ৰদ শ্ৰিদ শ্ৰীৰ পৌৰ नम्प्रदेशित्र्यास्त्रम्थाः स्वार्थः त्रक्षेत्रम्थः वित्रप्रदेश्ये क्षेत्रः सर्वेद्वात् प्रदेशः द्रामी शक्ता ने शक्षेया राष्ट्री सराधे सराधे ने साम है न र्राची 'भूर्' खेना'ची 'सर माने 'नहर 'र्स 'ने मा का माने 'र स्वा का माने स्व माने 'र स्व माने स्व म

गर्विगराषरार्विश्वश्चर्यात्रेश्वर्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र नह्रव में क्रम्य भीट देश थे के माट में र भुग्राय के व ने नय की व ना निष्याक्तिः भूत्रक्तियाक्तरः यद्ये व्ययः तृत्वय्यायः विष्ययः भूतः श्रुतः वी रुषाधुव रेषा वें र वें र सूर धेवा वी र्से व वार्षे स रेव से व सवर क्रुदे 'रेग'गव्राव्या क्री'क्षर'गवि'वह्रव'र्ये 'वहेर्या व'या या या या रेग' नव्या मार्थित व्याप्त व्यापत व्याप यायायावियायार्राची अत्राधियारे श्रिया छ्राप्र श्रियायवेरा दंशातु विराधित् ग्रेत्यात्ता क्षेत्र केव्य का मुण्येया मुत्र निर्वे यथा तु केत नमा सन्दर्भे अलें 'र्ने अलें 'र्ने अची 'र्ने अनु 'र्पे द 'र्पे द 'र्पे द र्गेरियो मान्या र्ख्या रेगाया मानेया है या ने सिये में नियं नियं प्राया है या नियं में नियं प्राया है या नियं में नियं प्राया है या नियं प्राया है या नियं प्राया में सियं प्राया नियं प्राया में सियं प्राया नियं प्राया में सियं प्राया नियं प्राय नियं प्राया नियं प्राय नियं प्राया नियं प्राय नियं प्राया नियं प्राया नियं प्राया नियं प्राया नियं प्राया निय नदे क्षात्रश्रुराष्ट्रियाः अन्तरानरान्द्राने दे यात्र अन्तर्भाहे सूयाः वशहे सूगा हु पर्शे हे राजे वा ने न सून जे गार्से न हैं न जो सन गावे येग्रार्थि विगायदे र दर्गे अवस्य अर्के अर्थे अर्थे अर्थे र सर्भे विश्वा वनश्रायश्राद्यार्थिक्षेत्राच्यारायात्रम् कुर्ते याया केवारी सेत्। स्यायी

नु:स्वा'य'गविन ग्री:भून'येगा मुन्न नदे :श्रून'गर्शे दर्शन पुरद्गा यानवारी मायाने देवारी ये से नायाने ना वके त्यया देहें मायानवा धेवा मभा सःसःन्यान्वरायम्। स्रमःश्चीः यन्तः वेराः वेराः विराधिः स्वराः स्याः म्बर्भः र्र्स्निनः र्र्स्ट्रिनः में व्ययः तुः मन्यः मार्थे यः त्रेनः नुमें यः विनः। व्रियः धरः ररः वी 'रेवा'वावशः ग्री 'ग्रां वि 'यहव' र्से 'विवा'वरेरः व 'रूरः गावव गावेश सव श्री त्यश विवा धिव स निया विवा सर स्ट भी सेवा यावर्षा श्री: इत्यावि वित्रा दे वर्षा यावव श्री देया यावर्षा श्री रा गर्विग्रश्यदेग्रश्चे द्रायि श्चित्र श्चित्र ग्वे प्रवर्श्व व्याप्त । धेव परि देश के शक्ते दिया ही श परि के श परि के श हिदाया गिविगात् । भर विगासर र र गो अर भी भी भी राम र र र रे त्र र गावित । र्वेगायात्र्याळ कुराये प्राये सेगायात्रा भेगायो किंद्या शुप्त दुवा त सर्देव विवा उसाव माये वामा पर सूर पर समर वे सूर रर वी से

र्सेत सर्गे में या त्रा हिया हिया हो ८ मा त्रा या व्या या व्या या या व्या या या व्या या या या या या या या या य

न्कः वनराष्यान्द्रः रेविः श्विनः युष्यो सराद्या विष्टिनः येवे श्विनः सर्वे श्विनः सर्वे श्विनः सर्वे श्विनः सर्वे सन्दर्भ सम्बद्ध स्पर्वे वार्या विष्ट स्पर्वे वार्य स्था क्षेत्र के वार्य सम्बद्ध समित्र सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध समित्य सम्बद्ध समित्य सम्बद्ध समित्य सम्बद्ध समित्य समि विवास वर्गा नित्रभूत भी गानी स्टामिन भेगार मिन्य भर है। के गरा ग्री विश्वासाम् स्वास्त्र स्वासा है साने न हैं न से न प्रदे न न न में साम न न ने र्देर नशा वें गहेश गशुश विवा मी वर र न महेर यर शुर वश सबर विगा सेर रे जयदर भेगा हैं र र र साय ही सायह ही से सर हैं। वर्ष क्रिंगळेव यदा सम्मित्र वर्षा प्रमित्र केवा मित्र वर्षा मित्र ग्रिन्द्र में विग्राश्चर प्रदेश शेष्ट्र न्या भीता श्रिन कुर समर म्रेव पाउँ सान्दा है नाय हो दार्शिया साम्या हो सानु विसानु र्श्वेरायान्वेर्यारेत्। श्वेराकुरायवराष्ट्रेरायवे त्रेरायार्थे

बिसर्विनाहेशस्य स्ट्रास्ट्रिन्द्रिनाम्बर्स्स्रिनः श्रुट्रिस्य विस्तर्भे ब्रेराणेगार्सेर्यानरावशुरानवे हेत्।वाञ्चनावर्ग श्चित के दारा श्चित्र किया यो शर्षिया सर हैं साधिया वर्षे पर श्चित्र श्चित्र स्थित । ग्रदाहेशासु मुद्दादिका सा ग्रुसा सूत्र सा निवा निवा है। गार्थ्याययापराश्चेरार्पेरायाश्चर। द्रोत्रींगाग्यरायरार्थ्यात्य ग्रदादे द्या अर्थे श्वा श्व श्वा हि से द्या पार्श्व या सार्थे या सार्थ या स क्रेन्यः स्टाम्बे नह्रासे विमाळम्यासा स्त्रा सम्द्रिन छेत् श्रीः न्यो मन्दर्द ने निविद् रुष ने निर्मेश में या प्राप्त कर विद् वह्यायी व्यक्षणा हो दास्य क्षेत्र त्वेया वित्र क्ष्या प्रस्तुमा दार्के व्य रियाम्यत्रम्यम्यकेष्यम्यस्य विष्यम्यस्य विष्यम् धिमार्श्वेनःश्वेनःभेन्नःभेन्नःभिमान्मेन्या नेमानीःनेमामान्यः र्श्वेन पार्व पार्व अभून अप्योप्तर्से पार्व प्रति अप्तार पित्यार सुर सेत् धीवा नेयावा गुराबरानमूवामदे श्रेवाये येवा रिन्ट में बियामदे श्ची स्वार्श्व वा क्ष्ट्र स्वार्श्व वा व्यव स्वार्श्व वा वा व्यव स्वार्श्व वा व्यव स्वार्श्व वा वा व्यव स्वार्श्व वा व्यव स्वार्श्व वा व्यव स्वार्श्व वा व्यव स्वार्श्व स्वार्थ स्वार्श्व स्वार्थ स्वार्व स्वार्व

यदी दुर्भाव राप्टे राप्टर दुर्ग हो ज्ञानी मि हिंग्रार्भ निमायहें व हु । यस द र्राया सुराया स्थान स्था वर्षान्यून्याधीवावास्य स्वाप्तान्य । स्वाप्तान्य । स्वाप्तान्य । स्वाप्तान्य । स्वाप्तान्य । स्वाप्तान्य । स्व विया कया अपर्यो रुअपरे अपरे प्यान्दर्गे के दाय अपया पार्से या अ वर्षानेवे सुँग्राया भेरा गुः विष्या या विष्या वर्षा या वर वयायायाय्व यदे क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र होत्र द्वीया देय हो या विवास है। हेन्से कें नारेगाने सून र्रेन्ट्रिन्ट्र वेन प्रमुग्ने । प्रस्निन्य क्रम्य प्र हो न्यान्ना यमास्य में विया यो विन्य सम्देश ययात्राविषाः नद्ययापाद्या यादेद्या मुखाविषे ययात् श्रीत्रापा वर निव नी भे राधे भें ना मदे ने का नहत में निक्ष दि वर्षाणदावश्चरः र्ह्वे वाहेशर्देवार्षा ग्रीरादे सेदावदे ता श्रुदावर्देनः श्चेश। यर हेत्यात्य श्चर पर्रेत् श्चेयाय श्वर त्रेत्र श्चेयाय श्चेय श्चेयाय श्चेय श्चेयाय श्चेय श्चेयाय श्चेयाय श्चेय श्चेय श्चेय श्चेय श्चेय नहत्र न्वे रामान्य। वावव द्यी पुनारा मुव त्या नहेव वर्षा ने प्या

नेशप्तर्देनप्तने प्यन्नेशप्तर्देन ग्रीश्वामन् प्तर्देन से से सुन में । यागुराष्ट्ररान्गेवित्सर्ह्यान्यस्वानित्रेष्ट्रीव्यस्य । विचानियास्य न्याः वेरःन्याः व्हें व्यः नःन्ना विनः विनः व्यः यार्थः यार्थे याः वेनः ठिटा। शुन्ध्रव श्वव हे या श्वायायायायाची विद्यायात्व द्वायाया है या नश्रम्यासदे नोग्राश्येत प्रशा इन्न में म्य श्रापया गास्र वहित ष्यरा विश्वाश्राद्यान्वत् स्टारेदे श्रीतामहेरान र्र्हिशासान र्वे र व र प्याप्याया वहें व र पदे । सूर हिया श्वा र सूर्या हिया हिया हिया हिया हिया है या क्वे र मान्द्र र अर्थे र निर्मा वर्ष अर प्रह्मा अर प्रहमा अर प्रहम अर प्रहमा अर प्रहम अर प्रह गणेर न भे निर्मा हे तु रे श्रमाननमामान विवास पर हिन वर्देन्ने अवस्खर् सेन्यम् क्रिंद्र नवर पेन्यम् विश्वेम् यादिम् यायन्य कुंग्याया केर्दे।

गशुमा उरामर्डेन ग्रीमानेन यह्या ग्रेन या

वडा श्रूचःश्रूदःवे ने या इवे वावया वादः इदः वेवा स्दः वी श्रूदः या वेंब्रस्य होत्रस्थ्री हैं अ बेब्रस्य होत्रस्त्र । इब्रस्य होत्रस् र्गेष्रश्रायम् होन्या हान्यम् होन्यवे में मेश्राविषा धेव हिन्। विनायह्यानि क्याने प्रमानन्याने स्वेषा ग्रामान ने विन्ति नित्र ने विन्ति । विनःसस्यायह्यायावियाने। वर्त्ताविनःवर्त्याविनःश्चीःन्धेःभूवार्यसः ग्रीशासी केंगा पर से समा क्या रुपा त्रात्र मात्र मात्र विषेत्र मुं का सर में दर्सेयासून्गीया नयसगाविषान्तेन्यान्ता नसून्यानेन्या कः वहेंगाने न्या निर्वे विनाने नाम स्वाम स्वा वया विशःहेनायानायरानार्चनायान्या देवानायायरानार्गितः वया इराजें ५ के या द्वाया मार्ग या या या राष्ट्रीया द्वे रा यद्गी

दः र्वित्रः सेवाः वाव्यः श्रितः श्रितः वीः वित्रः वयः व्ययः वयः वित्रः व्ययः वित्रः व्ययः वित्रः वित

विनायह्या ग्रुमाममायद्दरायी वार्षे या ग्रिया यश्चित्रार्शेष्ठेश्चार्याष्ट्रित्राष्ट्रित्राष्ट्रित्रात्र्याञ्चेत्राच्चार्या वर्द्दान्द्रम् गहेश्वस्थानेनावह्रम्यो गर्डे मार्द्द्रम्या गान्त प्रिया गुरापार्दे राप्तकं राधित या गर्या मार्या स्वापित हिंगा गी। वनसायसान्दावनाळन् ग्रीसासायन्दाना विवासह्यावे र्श्वेन श्वेन यो में ने सासर्वे के राजिया भेता ने या यात्र राखु कंन सर्वेन यनेग्रायार्नेरायायारे यायरात्वियायह्यायी ये सेयायने यहूरा नर्गेश ने लायर गुर बर नम्भन परे भ्रेंन से श्री र ग्वर केंग यर-र्-त बुर-क्रे-तक्षुर-व-प्पर।।र्देव-वाक्षे-क्षेय्यार्भे यार्भे विक्रिया क्रेंग'न्रावे रेंदे पर्ने व पाय व निक्र में का निक्र में यः श्रें पर्देग्रां शे केंद्रप्रा देव या नहमा द्युद्वि वा शें श्रे शंकी या वि षर॥ रेवेशनश्रद्धान्यविवाद्धदायाविवाहुगार्वेदान्या वेश्वेश्वे वर्रेग्रांग्रेंन्यर्ग्। धेन्याग्रयार्यर्ग्नरम्। में हिंग्रा ग्रम्य म्राम्य विष्ठ हु स्वर स्या द्रो क र्रो ग्रम्मिय्य वर्ने मार्थर हैं अ शे में रेस विवाधिता रेगा न्यात्र रहीं न र्श्वेट में में देश मानुना संभेता विना सर मासर किया पर हैं मा स्वर् यी यो 'से अ' विया 'धेव' परे द्रा द्रो र द्रो र द्रा अधर 'धेव' द्रा द्रा हिया । वर्त्रे निर्मे न त्रायासर्मिरायनेवारायाहें दायदे वित्रात्रीयावात्रार्श्वितार्श्वेतार्श्वेतार्थे वुरुष्य प्रमान्द्र कुरक्षन् ग्रम् सर्वे मार्च प्रमान्द्र भेता वर्ने र सो र प्रवे श्चिर हिंग्या ग्री श्चिय क्षेत्र प्रवे नर्हेन् श्रीराविनायह्या श्रेन्यते ने सह्या सन्न श्री श्रामा विया धिना र र्केंश दुर नर्कें द श्री श वि न पहुर्ग हुश हेश हेश हैश हैश र्देश वेद ग्रायम् प्रायम् । दे त्यय प्रमें या परि ने या है ग्राय

ग्रम् नवर हुं। न भेत्। र केंशने व्यावनमा मार्थ हैं द्रमा रेग्रग्राही: १८। र्रिग्राग्रम्याग्रेयायायाय्वायायाया वर्षेयानहें न् गुरुष्याधिवाव। ने वे वे न वह्या यो गुनावन्य या यर यालेगाणेवाया नेवावे प्राप्ते विष्ठिता श्री वार्श्विताया नुवाके विष्ठा श्री ने 'ते 'रे 'कुदे 'सहे रार्थे न्या 'भेगा'या पहेग्या या नवेत 'कुर 'क्षे हो न रादे भ्रेग्रास तु कुर कुर विग हु न स्रेन्स न साधित त्या हे त्या हु ग्रास सर सें विवा सर्वेर श्वा राधेव। र तुर श्वें वा सार्धेर सा त्र हिंव धेंद्रअः अर्वेदः द्वीं अवः सुः अत्रुदः दुः धरः दवीं द्वीं श रेगाम्बर्भः र्रेन र्रेन स्वास्त्र स्वास्त्र म्यान्य स्वास्त्र स्वा विगाधिव प्रमा में अप्तर्क्षम्य पर्देगा गान्त त्र या भे भे भी ग्वर्यार्श्वेन श्वेन देवाय या वर्षा अर्थे अर प्रहेग्या या प्रेने वि वनसःज्ञा नम्यद्येत् ग्रीः नुसः मनसः वर्षे । या नक्षेत्रसः नुसा मः र्केः

यास्य ता से ना पात्र सा से ना से ना से ना से ना से ना से ना सा से ना से क्षेत्रः श्रृं व : कन् : श्रूनः नगावः व : न्दाः ने व : यो : नवीं याः याः नवायः व र्री नः श्री : वर्ते अंदा प्रदानिया वर्ते का वर्ते का वर्ते के र्वे अ'ग्री'सिया'अदे'दर'न द्वया'त्र अ'र्शेर'र्हेया यया'अवेय'र्'न इर' वशः भूषि वा कुः कः सदः भिष्वाः ग्रदः वादः सदः दर्वे वा श्रद्धे वा स यर दक्षियानि र क्रमाशु भी वा वर्त्तु वर्षा वर वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्षा वगानेरामें अप्रथान है अप्रथान ने अप्राहेत पर्केषान दे प्रथान दर नक्षेत्रः भे 'न्वे अ'सर्' न्वे वात्र अ'र्क्षेन विन्याद्व प्राप्त व्याप्त विन्याद्व वा यशर्ध्वाक्षे। ट.क्रूशक्र्यक्रटाक्षेट्रश्रेष्ठा स्वाद्यात्र स्वात्यात्र स्वात्यात्र स्वात्यात्र स्वात्यात्र स्व र्श्वेन प्रत्न के स्थायने से स्थायने स नने सूगा के तर्दं साया पद्मना सावगा है विगाय है। वर्ने न सुक्री साया न्यादःस्याः अर्थे वियाः वः वस्य वस्य स्थाः वर्षे न्याः स्याः यर्गे हिया। ट.क्रेंशर्से य हैं ट.चावट से व.टटा विच.वह्या यहेवा मुन्। क्रेंसःक्रमाः अटारमाः सर्वे नः में टार् भी मोदे मार् क्रेमा सारा

र्रे विवा र्रो वा पर रेवि सेवा प्रसर्जिया स्वा ने राज् र्रे न र्रे न र्रे न र्रे क्रिंयद्रीते त्यश्रामात्रे त्याञ्चना हु नावन त्व ही न क्रुं नाय के व र्षे रेत्। तुश्यस्वश्यक्षंत्रमुत्यवेष्ट्रस्थव्योः ह्रेष्वेत् हें श्रायार्थे गीर वे प्यम्याया गीया विश्व से ने वे या प्रदे प्रक्रिया है या ने विमा यदे क्षेत्रानश्चन्यात्राम्यान्यानायदे न्या वित्रा द्वी द्वी द्वी द्वी द्वी द्वी वित्रा वित्रा शुन्यम् निष्य विषय श्री मार्गि सार्गि सार्ग केशने पावन श्री हैं एएएएयश दर्गे दश नवे दगाद हुन दनन नहें न ८८। क्रुवःवर्धेटमा ग्राचनःववः वरुषः ग्रामः वर्षेवः वर्षः ५ नर्वे न क्ष न के त्र के यदे चें से अ बिंद्र व अ द न व बेंद्र से अ स अ बें अ स द हे च द वें अ स विचा रेता न्यर्वेन्क्रवशक्तेन्द्येः हैं सामार्थे सेवासाकवासान्वे सामा 351 यह्यायी लु यळे ना

दर्स अभ्रवश्रास्त विवाह स्व न स्व न

८ क्टॅं ५ ५ ५ ८ व्या अर्थ । व्या विष्य १ १ १ विष्य १ १ विष्य १ विष्य १ विषय १ व विनार्थे उत्राधेत प्रमासिक प्रमासिक विनार्थ । इत्राप्त स्वापित र्क्टॅर्स्यूर्र्र्र्रे विगाळग्रायर्देर्प्राप्तार विगायस्य पर्देर्ग्रे रेप्ता के द्रग्रथम्य। ग्रेंस्य देस नर्गे द्रिय के द्रम्य के द्रम के द्रम्य के द्रम्य के द्रम्य के द्रम्य के द्रम्य के द्रम बेद्राया नेयानुपादायदार्गे विष्ट्राद्याय्य विष्याययार्दे । देशक्षायद्गेर्या श्रुवा ग्रीवा सेना ने त्यश्रा ग्राटा देवा वालु दान में हो दा धीव'व'यद्य कें अ'रेग'ग्रायर कें अ'धीव'व'यद्य ग्राट'या धर रहा भी कुंग्राश्चार्योः भ्राप्ता विगाकग्राश्चराये दाया हैं साम्विराद्वराये गिनेश ग्री :कर् अर्वेदे गिठेग ग्रूर : न्। क्रिं अरेग : न्र स्वारा नरास

शुःरें निर्मा में निर्मा के निर्मा क नम् तस्रे व में अप्तः कें त्यापार्थे क्षुम् निवे व र्थे न प्राथे । द रें कें नम् वर्षेत्रःश्चीःन्वरःनुःशुरःहेःररःहेन्ःश्चेन्यःवनेवर्यःश्चनःश्चेत्र्येन्। श्चे 'र्ने 'सर'न्या'डेया'य'सर्कें न'ने ने न्य'सर'से 'कें 'याडेया'न्र सर' र्ये विवापित्रित्यान्यायः तयाः विवास्य वया विवास्य विवास व केव में श दुर न हैं व दुर वर्ष अवर ग्रुव प्रव्या भेर पर अळं अश वहें वाराने मेन। अयह श्री अयावश्य संर्ह्मिन सदे नुस्त सुवा हे स गशुरश्यान्यविद्या नयानार्द्येन्सेन्याद्यान्याकेष्यम्। वर्ग्य अर्थे वायायदे 'तुया स्वयायदे स'र किं' हे या ग्राम से वा वावया र्श्वेन श्चें दानी त्यम शुः दुर प्रमानी लियाम दर्गे मानदा श्चे तें रे रे रे नविव ने राष्ट्रव से सूरळगरा न्वें राष्ट्रवा र में र निव र सें न से स वें किट सम्मन्त्र में भारती मार्च मा न्य-नुःवहेत्-पवे वन्वा-सर्वो नयस्य दुवा दंस हुराया धेत् परा

दवायायहियाचारासकेरासईयाननवारानश्चिरार्दे॥